ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.886443

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

प्रेमचंद और श्री लंका के कहानीकार मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में अंतर्गत चित्रात्मकता और अलंकारिकता

डॉ. आर.के. डी. निलंति कुमारी राजपक्ष [*1]
[*1] ज्येष्ठ व्याख्याता भाषा, संस्कृति एवं रंग कला अध्ययन विभाग, श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, गंगोडविल, नुगेगॉड, श्री लंका।

लेख का सारांश :– प्रेमचन्द (1880–1936) और श्री लंका के प्रमुख कहानीकार मार्टिन विक्रमसिंह (1890 से सन् 1976) अलग–अलग देशों से हैं फिर भी उनकी कहानियों में बहुत सी समानताएँ पाई जाती हैं। समकालीन होने के नाते दोनों कहानीकारों की विषयवस्तु पर तत्कालीन समस्याओं का प्रभाव पड़ा है। प्रेमचन्द तथा मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में चित्रात्मकता और अलंकारिकता का प्रयोग मिलता है।
प्रेमचंद द्वारा विरचित 'फातिहा', 'तगादा' तथा मार्टिन विक्रमसिंह की 'विनोदास्वादय', 'वहल्लु', 'धातु कोलाहलय', 'बडगिन्न', 'मुदियान्से मामा' तथा' अहिंसावादिया' कहानियों में कुछ स्थलों का वर्णन पाठकों के मन में एक चित्र सा खिंच जाता है। चित्रात्मक शैली द्वारा दोनों की कहानियों में वर्णित घटनाओं में सजीवता आ गयी है।
प्रेमचंद की कहानियों की अलंकारिकता के प्रयोग के लिए सुजान भगत, पूस की रात, अलगोझा, पत्नी से पति आदि कहानियाँ उदाहरण हैं। मार्टिन विक्रमसिंह द्वारा विरचित 'धातुकोलाहलय', 'हदँ साक्कि कीम', 'गॅहॅणियक', 'हिस्कबल', 'उपासकम्मा', 'परकारयाट गल गॅसीम' तथा 'बेगल' आदि कहानियों में अलंकारिकता विद्यमान है।
इस प्रकार प्रेमचंद तथा मार्टिन विक्रमसिंह विशिष्ट प्रकार से भाषा में चित्रात्मकता तथा अलंकारिकता लाकर पाठकों को आकर्षित करने में सफल हुए।

मुख्य शब्द – प्रेमचंद, मार्टिन विक्रमसिंह, कहानी, चित्रात्मकता, अलंकारिकता

Cite This Article: डॉ. आर.के. डी. निलंति कुमारी राजपक्ष. (2017). "प्रेमचंद और श्री लंका के कहानीकार मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में अंतर्गत चित्रात्मकता और अलंकारिकता." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 5(8), 223-227. https://doi.org/10.5281/zenodo.886443.

प्रस्तावना

प्रेमचंद की कहानियों की चित्रात्मकता

चित्रात्मकता भाषा का ऐसा गुण है, जिससे कहानी को पढ़ते समय पाठक के मन में एक चित्र सा खिंच जाता है। प्रेमचन्द की अधिकांश कहानियों में चित्रात्मकता है।

'फातिहा' कहानी में सरदार अफ्रीदी के कैदी बनने के बाद उनके खाने–पीने की व्यवस्था के बारे में विवरण एक चित्र जैसा है– "अंत में एक छेद से चार बड़ी–बड़ी रोटियाँ किसी ने बाहर से फेंकी। जिस

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.886443

तरह कुत्ता एक रोटी के टुकड़े पर दौड़ता है, वैसे ही मैं दौड़ा और उठा कर उस छेद की ओर देखने लगा, लेकिन फिर किसी ने कुछ न फेंका, और न कुछ आदेश ही मिला। मैं बैठकर रोटियाँ खाने लगा। थोड़ी देर बाद उसी छेद पर एक लोहे का प्योला रख दिया गया, जिसमें पानी भरा हुआ था। मैंने परमात्मा को धन्यावाद देकर पानी उठाकर पिया। जब आत्मा कुछ तृप्त हुई तो कहा थोड़ा पानी और चाहिए।"[1]

'तगादा' कहानी में सेठ सुंदरी से बचने के लिए दौड़ता है उसी का वर्णन पाठकों के मन में एक चित्र सा खिंच जाता है।

"सुंदरी ने फिर दौड़ाया। सेठजी फिर भागे। इधर पचास वर्ष से उन्हें इस तरह भागने का अवसर न पड़ा था। धोती खिसककर गिरने लगी, मगर इतना अवकाश न था कि धोती बाँध लें। बेचारे धर्म को कंधे पर रखे दौड़े चले जाते थे। न मालूम कब कमर से रुपयों का बटुआ खिसक पड़ा। जब एक पचास कदम पर फिर रुके और धोती ऊपर उठायी, तो बटुआ नदारद। पीछे फिरकर देखा। सुंदरी हाथ में बटुआ लिये, उन्हें दिखा रही थी और इशारे से बुला रही थी। मगर सेठजी को धर्म रुपये से कहीं अधिक प्यारा था। दो–चार कदम चले फिर रुक गये।"[2]

इस प्रकार चित्रात्मकता उनकी कहानियों का एक विशेष लक्षण है।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों की चित्रात्मकता

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों की एक प्रमुख विशेषता उनकी चित्रात्मक शैली है। चित्रात्मक शैली द्वारा वे कहानी में वर्णित घटनाओं में सजीवता ले आते हैं। उदाहरण के रूप में 'विनोदास्वादय' कहानी में उन्होंने निम्न प्रकार चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।

"पानी में गिरे हुए चावल के दाने खाने के लिए झगड़ने वाले मछली जैसे चार लड़के पानी में पड़ते हुए सिक्कों को पकड़ने के लिए पानी में डूबते हैं। ऊपरी मंजिल की कुछ नारियाँ विनोदास्वादन के लिए कभी सिक्के पानी में डालती हैं।"[3]

'वहल्लु' कहानी में हदँया (साँड़) की आकृति और उसके चाल चलन को प्रकट करने के लिए लेखक ने चित्रात्मक शैली का निम्न प्रकार सहारा लिया है।

"गाँव का कोई व्यक्ति जब उससे कोई काम न लेता तब वह जमीन पर पड़कर पान चबानेवाली बुढ़िया जैसी पुनश्च करती है। उसके मुँह के दोनों भाग चक्की के दोनों हिस्से जैसे चालू होना और उसके सिर की नसें तने रहना दूर के व्यक्ति को भी दिखाई देता है। पुनश्च करते समय कभी वह पूंछ को हिलाते हुए एक सींग से अपना शरीर खुजलाता है।"[4]

'धातु कोलाहलय' कहानी में भी स्थल–स्थल पर चित्रात्मकता प्रयुक्त हुई है। इसके सजीव उदाहरण निम्नवत हैं–
"मन्डप में आने के लिए तीन तरफ से सीढ़ियाँ लगी हुई हैं। लटकती हुई फूल की मालाओं और बिजली से प्रकाशित मंडप में मेज पर सोने का संदूक था। एक ओर की सीढ़ियों से कतार बाँधकर नारियाँ, लड़के और

[1] रवीन्द्र कालिया, संपादक, प्रेमचंदः हिंदू–मुस्लिम एकता संबंधी कहानियाँ (फातिहा), 2012, पृ. 34
[2] प्रेमचंद, मानसरोवर–चार (तगादा), 2011, पृ. 20
[3] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (विनोदास्वादय) 2012 पृ. 52
[4] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (वहल्लु) 2012 पृ. 109

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.886443

लड़कियाँ धातु की पूजा करने आते हैं। हाथ जोड़कर धातु को नमन करते हुए मेज के चारों ओर चक्कर लगाते हुए दूसरी सीढ़ियों से निकल जाते हैं।"[5]

'अहिंसावादिया' कहानी के परिशीलन से भी मार्टिन विक्रमसिंह की चित्रात्मक शैली के प्रयोग का आभास पाठक को मिलता है।

"लीला ने रूपा की ओर देखकर आँखों से संकेत किया। फिर उसने मछली को बाहर निकालकर देखा। मछली को इधर–उधर पलटकर उसने देखा कि मछली ताजा है कि नहीं।"[6]

मछलीवाले के आचरण पर बातों से नहीं बल्कि इशारों के द्वारा लीला और रूपा का अपने विचारों द्वारा आदान–प्रदान करने की स्थिति लेखक ने चित्रात्मक शैली को आधार बनाकर प्रकट की है।

'बडगिन्न' कहानी में सुरंचिया का चरित्र चित्रण करने के लिए लेखक ने चित्रात्मक शैली का सहारा लिया है–
"सुरंचिया ने बीड़ी पर आग देकर मुँह में दबाया। फिर जीभ से बीड़ी को पलटकर निकालकर एक माचिस की तीली लेकर जलाया। मैं कुछ देर तक उनकी बातों को सुनता रहा।"[7]

'मुदियान्से मामा' कहानी में चित्रात्मक शैली प्रयुकत होने का उल्लेख निम्न प्रकार है–
"सियदोरिस ने बहुत ऊँचे नारियल के पेड़ के पास जाकर पेड़ के ऊपर की ओर देखा। फिर उसने नतनयन, पेड़ पर चढ़ने के लिए प्रयुक्त चूड़ीदार रस्सा पैरों में लगा लिया। फिर हथेली पर थूक कर दूसरे हथेली से रगड़ते हुए पेड़ पर चड़ने लगा।"[8]

इस प्रकार उनकी कहानियों में चित्रात्मक शैली का सफल प्रयोग विद्यमान है।

प्रेमचंद की कहानियों की अलंकारिकता

लेखक द्वारा रचनाओं में अलंकारिकता का प्रयोग करने से उनमें एक विशिष्ट सौंदर्य आ जाता है। प्रेमचन्द ने भी अपनी कहानियों को सशक्त बनाने के लिए अलंकारिकता का प्रयोग किया है। उनकी कहानियों में कहीं–कहीं अलंकारिक भाषा का प्रयोग दिखाई देता है।

1. "सुजान की खेती में कई साल से कंचन बरस रहा था।"[9]
2. "हल्कू ने रुपये लिये और इस तरह बाहर चला मानो अपना हृदय निकालकर देने जा रहा हो।"[10]
3. "बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे, मानो उस अथाह अंधकार को अपने सिर पर संभाले हुए हों।"[11]
4. "प्रातः काल पानी का घड़ा लेकर चलती तब उसका गेहुआ रंग प्रभात की सुनहली किरणों से क्रन्दन हो जाता, मानो उषा अपनी सारी सुगंध सारा विकास और सारा उन्माद लिए मुस्कराती चली जाती हो।"[12]

---

[5] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (धातु कोलाहलय) 2012 पृ. 128
[6] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (अहिंसावादिया) 2012 पृ. 510
[7] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (बडगिन्न) 2012 पृ. 481
[8] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (मुदियान्से मामा) 2012 पृ. 280
[9] रवीन्द्र कालिया, संपादक, प्रेमचंदः किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (सुजान भगत), 2012, पृ. 35
[10] रवीन्द्र कालिया, संपादक, प्रेमचंदः किसान जीवन संबंधी कहानियाँ (पूस की रात), 2012, पृ. 22
[11] वही, पृ. 24
[12] प्रेमचंद, प्रेमचंद की संपूर्ण कहानियाँ (अलगोझा), पृ. 04

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.886443

5. "आग की शिखाएँ आसमान से बाते करने लगी, मानों स्वाधीनता की देवी अग्नि–वस्त्र धारण किए हुए आकाश के देवताओं से गले मिलने जा रही हो।"[13]

आलंकारिकता के लिए अन्य उदाहरण प्रेमचन्द की 'पत्नी से पति' कहानी से भी ले सकते हैं। "गोदावरी को रात भर नींद नहीं आयी थी। दुराशा और पराजय की कठिन यंत्रणा किसी कोड़े की तरह उसके हृदय पर पड़ रही थी। ऐसा मालूम होता था कि उसके कंठ में कोई कड़वी चीज अटक गयी है।"[14]

इस प्रकार प्रेमचन्द की बहुत सी कहानियों में आलंकारिकता देखने को मिलती है।

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में अलंकारिकता

मार्टिन विक्रमसिंह की कहानियों में अंलकारिक भाषा विद्यमान है। उनके द्वारा विरचित 'धातुकोलाहलय' कहानी का निम्नलिखित उदाहरण उल्लेखनीय है– "चाँदनी तथा पूर्णिमा के दिन जलाने वाले प्रदीपों से आलोकित मोती जैसे सफेद, रेत सहित मंदिर का आँगन पीपल के पेड़ का आँगन तथा स्तूप का आँगन आदि की सुंदरता देखकर मेनका का मन आनंदित हो गया।"[15] 'हदँ साक्कि कीम' कहानी का निम्नलिखित गद्यांश उनकी अलंकारिक भाषा का द्योतक है–"अधिकाधिक पीड़ा से एक स्त्री के मुँह से निकलने वाली आहों जैसी समुद्र से उत्पन्न आवाज बारिश के थम जाने के कारण सुनसान घर में पड़े हमें बहुत स्पष्ट सुनाई देने लगी।"[16] 'गॅहॅणियक' कहानी का निम्नलिखित उदाहरण उनकी काव्योचित भाषा का सबूत है– "बहुत ही विशाल, मृदुल, नीले रंग के कपड़े में स्थल–स्थल पर पड़े कपास के ढेर जैसे सफेद बादल आकाश में स्थल–स्थल पर घुमड़ने लगे। सोने की थाली से रिसने वाली सुनहरी धारा से चन्द्र मण्डल की चाँदनी नदी पर पड़ती है। नभ के तारों का प्रतिबिंब जब नदी पर इस प्रकार पड़ता है मानों फूलों से सौरभ गिर रहा हो।"[17] इसके अतिरिक्त 'हिस्कबल' कहानी में अनुला के चरित्र चित्रण में लेखक ने वर्णनात्मरक शैली के साथ–साथ काव्यात्मक भाषा का प्रयोग निम्न प्रकार किया है–"पहले उसके दोनों कानों को आकर्षित किए गए हीरे के झुमके आज दिखाई न दिए। पहले उसके नयनों की चपलता की स्थानों पर आज पवित्रता की गहराई दीखने लगी।"[18] साथ ही साथ 'उपासकम्मा' कहानी में प्रयुक्त अलंकारिक भाषा के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं–"लटकाए गए महीन कपड़े को हिला सकने वाला मन्द पवन तक कमरे में नहीं था। फिर भी मैं मुश्किल से लेने वाली साँसों से पड़ने से उपासकम्मा के सिरहाने पर पड़े दिये की शिखा का उसी प्रकार उतार–चढ़ाव होता है मानो वह शिखा चिड़िया बनकर कमरे के बाहर विचरण करेगी।"[19] "आँगन की एक झाड़ी पर बैठे हुए निशा रूपी नारी को चारण सुनाने वाले चारण कवि जैसे चिल्लाने वाले तोतों की आवाज़ इतनी प्रखर थी कि मानों हजारों तोते आँगन भर बैठे हुए चिल्ला रहे हों।"[20] उसी प्रकार 'परकारयाट गल गॅसीम' कहानी में भी अलंकारिक भाषा का प्रयोग निम्नवत हुआ है–"दोपहर के प्रचण्ड सूर्य की रश्मि जमीन की आर्द्रता अपने में समा लेने के कारण नीली मखमली जैसी घास गर्मी से तपने लगी।"[21] 'बेगल' कहानी का निम्नलिखित गद्यांश मार्टिन विक्रमसिंह की अलंकारिक भाषा का सजीव उदाहरण है–"चन्द्रमा विहीन गगन तल की तारों की श्रृंखला आज चाँदनी रात से अधिक टिमटिमाती है।

[13] डॉ कमल किषोर गोयनका, प्रेमचंदः देषप्रेम की कहानियाँ (पत्नी से पति), 2008, पृ. 124
[14] वही, पृ. 125
[15] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (धातु कोलाहलय) 2012 पृ. 127
[16] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (हॅंद साक्कि कीम) पृ. 312
[17] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (गॅहॅनियक) पृ. 748
[18] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (हिस्कबल) 2012 पृ. 747
[19] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (उपासकम्मा) 2012 पृ. 628
[20] वही, पृ. 627
[21] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (पक्कारयाट गल गॅसीम) पृ. 569

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.5281/zenodo.886443

दिशा रूपी संगमरमर के दीवार सहित गगन तल पर नीले रंग की छत पर तारे रूपी बत्तियों से आलोकित आलीशान नृत्यशाला सदृश दिखाई देने लगी।"[22]

इस प्रकार मार्टिन विक्रमसिंह विशिष्ट प्रकार से भाषा में अलंकारिकता लाकर पाठकों को आकर्षित करने में सफल हुए।

*Corresponding author.
E-mail address: nilanthiraj@ gmail.com

[22] मार्टिन विक्रमसिंह, मार्टिन विक्रमसिंह केटि कता एकतुव, (बेगल) 2012 पृ. 805